+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

YOJANA MAGAZINE ANALYSIS

(योजना पत्रिका विश्लेषण)

(भारत का ताना-बाना)

(May 2024)

(Part III)

TOPICS TO BE COVERED

- खादी: भारतीय स्वतंत्रता का प्रतीक
- भारतीय बुनाई का ताना-बाना और तकनीकी विकास

खादी: भारतीय स्वतंत्रता का प्रतीक

परिचय:

- 1917 में चंपारण सत्याग्रह के दौरान गांधीजी को बिहार के किसानों की दुर्दशा का सामना करना पड़ा। भीलवाड़ा गाँव में उनकी मुलाकात एक महिला से हुई और उनसे चर्चा के दौरान उन्हें एहसास हुआ कि वह अपनी साड़ी सिर्फ इसलिए नहीं बदल पा रही थी क्योंकि उसके पास दूसरी साड़ी नहीं थी।

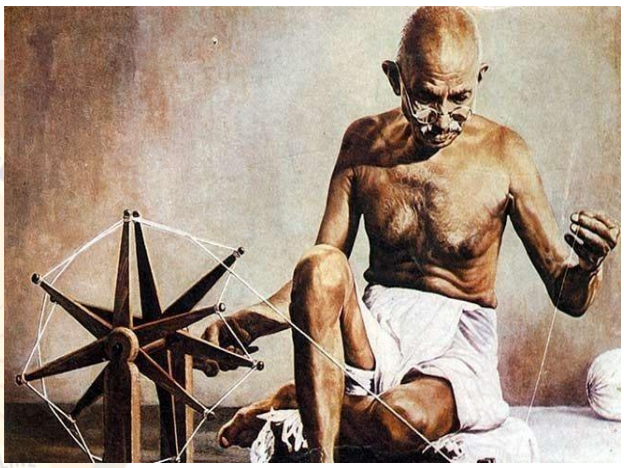

- अतीत में एक समय, हम शीर्ष कपास उत्पादकों में से एक थे। लेकिन हमारे किसान कपास से बने उसी उत्पाद से वंचित रह गए। कपास कच्चे माल के रूप में इंग्लैंड गया और फिर मैनचेस्टर और लैंकाशिर से कपड़े के रूप में तैयार उत्पाद के रूप में भारत वापस आया। अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए, अंग्रेजी शासकों ने भारतीय ग्रामीण लोगों की कपड़ा संस्कृति को नष्ट कर दिया।

पारंपरिक वस्त्र ज्ञान:

- भारत के नील-रंगे सूती इकत को फिरौन के मकबरे में पाया गया था, गुलाबी मजीठ का कपड़ा मोहनजोदड़ो स्थल पर तकलियों के साथ पाया गया था, ग्रीक

और रोमन व्यापारियों ने भारतीय उपमहाद्वीप के बढ़िया कपड़ों का वर्णन किया गया है। अजंता और एलोरा पेंटिंग, टेक्सटाइल सामग्री में विभिन्न डिजाइन और शैलियों को दर्शाती हैं।

- भारत के प्रत्येक भाग में कपड़ा डिजाइन की अपनी शैली थी - बुनाई, रंगाई, छपाई आदि के दौरान डिजाइन। कपड़े की गुणवत्ता भी क्षेत्र-दर-क्षेत्र भिन्न होती थी। वास्तव में, भारत कपड़ा प्रौद्योगिकी की कला में अग्रणी रहे हैं।
- भारत का कपड़ा देश की आन-बान और शान था और यहां तक कि कुछ देशों ने भारत से कपड़े के आयात पर प्रतिबंध भी लगा दिया था। ये भी हाथ से काते और हाथ से बुने हुए कपड़े थे, अतीत की खादी।
- औद्योगिक क्रांति ने अपना भयावह जाल फैलाया और इंग्लैंड में पावर-लूम उद्योगों ने भारतीय वस्त्रों को नष्ट कर दिया। ब्रिटिश औपनिवेशिक नीति के अनुरूप भारत में उगाई जाने वाली सभी कपास को बहुत कम कीमतों पर इंग्लैंड को निर्यात किया जाना होता था, जबकि ब्रिटिश मिल के कपड़े ने भारतीय बाजारों में बाढ़ ला दी थी।
- लाखों-करोड़ों भारतीय स्पिनर और बुनकर बेरोजगार हो गए और उन्हें सचमुच सड़कों पर फेंक दिया गया। भारत के गौरव-हाथ से काते गए, हाथ से बुने हुए

कपड़े को जबरन खत्म होने दिया गया और इसके साथ ही, बहुमूल्य पारंपरिक वस्त्र ज्ञान के विशाल भंडार भी गायब हो गए।

गांधीजी का खादी आंदोलन:

- जैसा कि गांधी जी ने कहा था- "1908 में लंदन में ही मैंने पहिए को खोज की थी। में दक्षिण अफ्रीका से एक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करते हुए वहां गया था। मैंने एक झटके में देख लिया कि चरखे के बिना कोई स्वराज नहीं है। उसी समय मैंने जाना कि हर किसी को कातना होगा, लेकिन तब मुझे करघे और पहिये के बीच का अंतर पता नहीं था, और हिंद स्वराज में करघा शब्द का इस्तेमाल किया गया था मतलब पहिया"।
- गोखले के सुझाव पर गांधी ने भारतीय लोगों की स्थितियों का प्रत्यक्ष अनुभव लेने के लिए भारत का दौरा किया। उन्होंने गाँवों की बदहाली को साक्षात् देखा। किसान लगभग आधे वर्ष तक रोजगार से बाहर रहे। चंपारण की घटना ने भी उनकी भावनाओं को तीव्र कर दिया और वह किसानों के लिए एक पूरक व्यवसाय की पहचान करना चाहते थे जो लाभकारी रोजगार के लिए उनके समय और ऊर्जा का उपयोग करने में मदद करेगा।

- उन्होंने अहमदाबाद के कपड़ा मिल मालिकों के सहयोग से आश्रम में बुनाई की शुरुआत की। इस प्रक्रिया ने फिर से भारतीय उद्योगों को समर्थन दिया और किसानों को सीधे लाभ नहीं पहुंचाया।
- गांधीजी ने एक ऊर्जावान महिला, गंगाबहन मजूमदार से मुलाकात की और उन्हें कताई के पारंपरिक तरीके और उसके उपकरणों का पता लगाने का काम सौंपा। गंगाबहन को बड़ौदा राज्य के विजापुर में चरखा मिला। वहां बहुत से लोगों के पास अपने घरों में चरखा था, लेकिन उन्होंने लंबे समय से उन्हें बेकार लकड़ी के रूप में छतों पर रख दिया था। उन्होंने गंगाबहन को कताई फिर से शुरू करने की तैयारी की अपनी बात बताई बशर्ते कि कोई उन्हें सिलवटों की नियमित आपूर्ति प्रदान करने और उनके द्वारा काते गए सूत को खरीदने का वादा करे।
- गांधीजी ने स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से राष्ट्रवाद की भावना प्रज्वलित की और खादी को राष्ट्रीयता का प्रतीक बनाया। उन्होंने, खादी आंदोलन के माध्यम से, औपनिवेशिक शोषण की नींव पर प्रहार करने के लिए अपने अहिंसक हथियार को तैनात किया।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

खादी और स्वदेशी की भावना:

- खद्दर स्वदेशी का ठोस और केंद्रीय तथ्य है। खद्दर एकमात्र स्वदेशी कपड़ा है। मिल-निर्मित कपड़ा केवल एक सीमित अर्थ में स्वदेशी माना जाता है क्योंकि इसके निर्माण में केवल भारत के लाखों लोगों में से बहुत ही कम लोग भाग ले सकते हैं जबकि खद्दर के निर्माण में लाखों लोग भाग ले सकते हैं।
- गांधीजी के पास स्वदेशी आंदोलन के पुनरुद्धार का आधार था। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि उनके देशवासियों को विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करना चाहिए। उन्होंने स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से राष्ट्रवाद की भावना प्रज्वलित की और खादी को राष्ट्रीयता का प्रतीक बनाया।
- उन्होंने विकेंद्रीकृत पैटर्न में ग्रामीण अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण के कार्यक्रम के हिस्से के रूप में खादी का प्रस्ताव रखा। यह स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बन गया।

खादी का अर्थशास्त्र:

- खादी आंदोलन ने ग्रामीणों, विशेषकर महिलाओं के सशक्तिकरण का मार्ग भी प्रशस्त किया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की बड़ी संख्या में भागीदारी का एक बड़ा कारण निश्चित रूप से खादी आंदोलन था।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- खादी गांव के सौर मंडल का सूर्य है। विभिन्न उद्योग ग्रह हैं जो खादी की ऊष्मा और उससे मिलने वाली जीविका के बदले में समर्थन दे सकते हैं। इसके बिना, अन्य उद्योग विकसित नहीं हो सकते। गांवों को अपना खाली समय लाभप्रद रूप से व्यतीत करने में सक्षम होने के लिए, ग्रामीण जीवन के सभी पहलुओं पर विचार किया जाना चाहिए।

स्वतंत्रता आंदोलन का प्रतीक:

- चरखा स्वतंत्रता आंदोलन का प्रतीक बन गया और खादी राष्ट्रवाद की पहचान बन गई। भारत ने औपनिवेशिक सत्ता से जनशक्ति की ओर एक बड़ा बदलाव देखा।
- इस देश में एक समय आम लोग पुलिसकर्मियों से डरते थे लेकिन गांधीजी की अहिंसक रणनीति की शुरुआत के साथ, पुलिसकर्मी 'खादी लोगों' से डरने लगे।
- विशुद्ध रूप से एक आर्थिक गतिविधि एक शक्तिशाली राजनीतिक हथियार बन गई।

भारतीय बुनाई का ताना-बाना और तकनीकी विकास:

परिचय:

- प्राचीनकाल से ही भारतीय हैंडलूम कारीगरी के लिए विश्वविख्यात रहा है। भारत के हर राज्य के हथकरघा उद्योग में काफी विविधता के साथ कपड़ों पर सुंदर इंद्रधनुष मौजूद हैं। इनमें एक तरफ तो हाथ से काते और बुने हुए कपड़े हैं, जिसकी देश की प्राचीन संस्कृति और परंपराओं से घनिष्ठता है, तो दूसरी तरफ पूंजी परिष्कृत कपड़ा मिले हैं।

- भारत में कपड़ा उद्योग की मूलभूत ताकत कपास, जूट, रेशम, ऊन जैसे प्राकृतिक फाइबर से लेकर पॉलिएस्टर, विस्कोस, नायलॉन जैसे सिंथेटिक मानव निर्मित फाइबर और फाइबर यार्न की एक विस्तृत श्रृंखला मौजूद है।

भारतीय वस्त्रों का पारंपरिक इतिहास:

- भारतीय कपड़ों का संदर्भ प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता, चट्टानों की कटाई की मूर्तियों, गुफा चित्रों, मंदिरों, स्मारकों से प्राप्त मूर्तियों में मानव कला के रूपों में मिलती हैं।

- ऋग्वेद में मुख्य रूप से वस्त्रों को अधिवस्त्र, कुरला और अण्डप्रतिधि के रूप में वर्णित किया गया है, जो बाह्य आवरण (घूंघट), एक सिर-आभूषण या सिर-पोशाक (पगड़ी) तथा महिला के कपड़े का हिस्सा है।
- कपड़े भारतीय सामाजिक और आर्थिक स्थिति से भी संबंधित थे, अभिजात्य वर्ग मस्जिनी वस्त्र और रेशम के कपड़े पहनते थे, जबकि आम वर्ग स्थानीय रूप से बने कपड़ों से बना वस्त्र इस्तेमाल करते थे।

भारतीय बुनाई का तकनीकी विकास:

- बुनाई वह विधि है, जिसमें ताना (लम्बाई की दिशा में) एवं बाना (चौड़ाई की दिशा में) परस्पर लम्बवत धागों को आपस में गूंधकर वस्त्र बनाए जाते हैं। ताना तथा बाना तकनीकी के अलावा निटिंग, लेस बनाना, फेल्टिंग, ब्रेडिंग या प्लेटिंग आदि विधियों से भी वस्त्र बनाए जाते हैं।
- वस्त्र प्रायः करघा (लूम) पर बुने जाते हैं। भारतीय हथकरघा उद्योग सबसे पुराने उत्कृष्ट शिल्प कौशल तथा सबसे बड़े कुटीर उद्योग में से एक है, जिसने आजादी की लड़ाई से काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कताई का पहला उपकरण 'तकला' था, जिसमें अंततः एक चक्कर जोड़ा गया, जिससे 'चरखे' का आविष्कार हुआ।

- भारत में खादी उत्पादन और हथकरघा उद्योग स्वतंत्रता का पर्याय बन गया था। ब्रिटिश शासन के दौरान हथकरघा बुनकरों की मशीनी धागे पर निर्भरता बढ़ने के बावजूद हथकरघा उद्योग प्रथम विश्व युद्ध तक बचा रहा। 18वीं-19वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के दौरान यह तेजी से यंत्रीकृत हो गया। मशीनों से बने आयातित कपड़ों की बाढ़ से तथा 1920 के दशक में पावरलूम की शुरुआत ने पारंपरिक भारतीय हथकरघा कारीगरों के समक्ष अनुचित प्रतिस्पर्धा पैदा की, और पारंपरिक हैंडलूम का पतन होता गया।

सरकार द्वारा कपड़ा उत्पादन के विकास का प्रयास:

- पावरलूम उद्योग को बढ़ावे के उद्देश्य से भारत सरकार के कपड़ा मंत्रालय द्वारा पावरलूम विकास एवं निर्यात संवर्धन परिषद का 1995 में गठन किया गया।
- भारत में कुल कपड़ा उत्पादन का लगभग 58.4 प्रतिशत विकेंद्रीकृत पावरलूम से, 5 प्रतिशत कपड़ा संगठित क्षेत्र से, 20 प्रतिशत हथकरघा क्षेत्र से तथा 15 प्रतिशत बुनाई के माध्यम से उत्पादित किया जाता है।
- इसके अलावा आंध्र प्रदेश, गुजरात, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु राज्य पावरलूम उत्पाद के उत्पादक हैं। खादी और अन्य ग्रामोद्योगों को बढ़ावा देने के

लिए भारत सरकार ने सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) मंत्रालय के तहत खादी और ग्रामोद्योग आयोग का गठन किया है।

- एक दशक पहले एक बड़ा बाजार होने के बावजूद देश में खादी और ग्रामोद्योग कारोबार मात्र 25-30 हजार करोड़ रुपये का था। सरकारी प्रयासों से इसमें तीन गुना मुनाफे तथा बिक्री में 5 गुना वृद्धि से यह कारोबार अब एक लाख तीस हजार करोड़ रुपये से अधिक का हो गया है।
- भारत के सूक्ष्म, लघु और मझोले उद्योग, बुनकरों, कारीगरों और किसानों के उत्पादों में दुनिया की बड़ी-बड़ी कंपनियों की रुचि बढ़ी है, जो इसे विश्व के बाजारों में पहुंचाने के लिए आगे आ रही है।

भारतीय स्वदेशी परिधान और हैंडलूम:

- कपड़ों की पारंपरिक शैली पुरुष या महिला भेद के साथ बदलती रहती है। प्राचीन भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्ट शैली एवं विभिन्न प्रकार की बुनाई तकनीकें थीं, जिसमें से कई आज भी जीवित हैं।
- भारत के कई ग्रामीण हिस्सों में पारंपरिक कपड़े आसान सुलभता और आराम के कारण आज भी पहने जाते हैं, जबकि शहरी इलाकों में तेजी से बदलाव हुआ है।

- देश में स्वदेशी हैंडलूम के कपड़े और सामान खूब खरीदे और पहने जाते हैं। आधुनिकता की दौड़ में यह कला पिछड़ती दिखाई देती है। स्वदेशी उत्पादों की महत्ता को प्राथमिकता देने और इस उद्योग को बढ़ाने के लिए आत्मनिर्भर भारत, मेक इन इंडिया, वोकल फॉर लोकल जैसे अभियानों से हथकरघा उद्योग और कुशल बुनकरों की मदद की जा रही है।
- सरकार के साथ निजी कंपनियों और बड़े-बड़े डिजाइनरों को अपने साथ स्थानीय गाँव-देहातों और छोटे-छोटे कस्बों से कुशलमंद कारीगरों/बुनकरों को जोड़ कर उन्हें उनके उत्पाद निर्माण में प्रौद्योगिकी सहयोग और उत्पाद संवर्धन के लिए आगे आना होगा।
- आज़ादी की लड़ाई में 7 अगस्त, 1905 को स्वदेशी उद्योगों, विशेष रूप से हथकरघा बुनकरों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत हुई थी। भारत सरकार ने अगस्त, 2015 से प्रतिवर्ष 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस मनाने की शुरूआत की है।

पर्यावरण के अनुकूल सतत (सस्टेनेबल) वस्त्र निर्माण:

- पृथ्वी पर मंडराते जलवायु परिवर्तन के कारण सतत फैशन बाजार में लगातार वृद्धि हो रही है। सतत वस्त्र आम शब्दों में लंबे समय तक चलने वाले उस कपड़े या उत्पाद से संबंधित है, जो पर्यावरण के अनुकूल होते हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- इन उत्पादों में इस्तेमाल वस्तुओं को दोबारा इस्तेमाल (रिसाइकल) किया जा सकता है। पर्यावरण के लिए खतरा बनता फैशन उद्योग, तेजी से प्रगति कर रहे सतत कपड़े के विकल्प के रूप में हमारे सामने है। इस दौड़ में भारत अभी शुरुआती दौर में है।
- भारत में महिलाएं शुरुआत से ही सतत फैशन की दुनिया में काम करती आ रही हैं। इनके द्वारा संचालित लघु कुटीर उद्योगों पर सतत फैशन का निर्माण करने वाली महिलाओं के इन पारंपरिक उत्पादों पर बड़ी-बड़ी कंपनियां अपना ब्रांड स्थापित कर रही हैं।
- हथकरघा प्रौद्योगिकी से ऊर्जा प्रभाव और पर्यावरण हानि लगभग शून्य है, जिसमें खादी, कपास के लघु कुटीर उद्योग भी शामिल हैं।